

[illegible]

"मुझे अखबार निकालने दो तो मैं इस बात की परवाह नहीं करता कि कौन धर्म का नियामक है और कौन कानून का निर्माता"—वेडेल फिलिप्स

दैनिक

भारतीय बस्ती

बस्ती 4 अक्टूबर 2026, रविवार

सम्पादकीय

यूपी चुनाव की दिशा दृष्टि

उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव अभी कुछ महीने दूर हैं, लेकिन राजनीतिक गतिविधियां तेज हो चुकी हैं। राजनीतिक दल संगठन को मजबूत करने, नए सामाजिक समीकरण बनाने और संभावित गठबंधनों को लेकर तैयारियों में जुटे हैं। सत्तारूढ़ भाजपा के साथ उसके सहयोगी दल अपनी रणनीति पर काम कर रहे हैं, वहीं समाजवादी पार्टी और कांग्रेस के बीच भी चुनावी तालमेल को लेकर बातचीत और दावेदारी का दौर जारी है।

हर चुनाव के साथ उत्तर प्रदेश की राजनीति में एक सवाल बार-बार सामने आता है क्या चुनाव जनता के वास्तविक मुद्दों पर लड़ा जाएगा या फिर जातीय और सामाजिक समीकरण ही उम्मीदवारों और रणनीति का आधार बनेंगे? यह सवाल इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि उत्तर प्रदेश केवल देश का सबसे अधिक आबादी वाला राज्य नहीं है, बल्कि यहां के चुनावी नतीजे राष्ट्रीय राजनीति पर भी असर डालते हैं।

जातीय समीकरण उत्तर प्रदेश की राजनीति की पुरानी वास्तविकता हैं। अलग-अलग दल अलग-अलग सामाजिक समूहों को अपने साथ जोड़ने की कोशिश करते रहे हैं। 2027 के चुनाव को लेकर भी राजनीतिक दलों की गतिविधियों में सामाजिक प्रतिनिधित्व और जातीय संतुलन की चर्चा दिखाई दे रही है। कांग्रेस ने हाल में अपने प्रदेश संगठन में अलग-अलग सामाजिक समूहों को प्रतिनिधित्व देने वाले नेताओं को महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां दी हैं।

लेकिन केवल जातीय गणित से चुनाव जीतने या हारने का निष्कर्ष निकालना आसान नहीं है। मतदाता की प्राथमिकताएं बदलती हैं। आज का युवा रोजगार, शिक्षा, प्रतियोगी परीक्षाओं, तकनीक और अपने भविष्य को लेकर साला चुनता है। किसान खेती की लागत, फसल की कीमत और सिंचाई जैसी समस्याओं पर बात करता है। शहरों में रहने वाला व्यक्ति सड़क, यातायात, बिजली, पानी और रोजगार के अवसर चाहता है। छोटे कस्बों और गांवों में स्वास्थ्य सुविधि गाएं, स्कूल, सड़क और स्थानीय रोजगार अभी भी बड़े मुद्दे हैं।

युवा मतदाताओं की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो सकती है। चुनावी राजनीति में अब सोशल मीडिया, शॉर्ट वीडियो और डिजिटल प्रचार का इस्तेमाल तेजी से बढ़ रहा है। राजनीतिक दल युवाओं तक पहुंचने के लिए डिजिटल माध्यमों का सहारा ले रहे हैं और रोजगार तथा शिक्षा जैसे मुद्दों को अपने प्रचार में जगह दे रहे हैं।

ऐसे में राजनीतिक दलों के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह होगी कि वे जातीय समीकरणों के साथ-साथ जनता के रोजमर्रा के सवालों का भी स्पष्ट जवाब दें। चुनाव के समय बड़े-बड़े वादे करना आसान है, लेकिन जनता अब यह जानना चाहेगी कि उन वादों को पूरा करने की योजना क्या है और उसका अवरर जमीन पर कैसे दिखाई देगा।

उत्तर प्रदेश में कानून-व्यवस्था, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, किसान, महिला सुरक्षा, महंगाई, बुनियादी ढांचा और सरकारी योजनाओं का लाभ जैसे पूरे अलग-अलग क्षेत्रों में अलग महत्व रखते हैं। पूर्वांचल की समस्याएं पश्चिमी उत्तर प्रदेश से अलग हो सकती हैं और बुंदेलखंड की प्राथमिकताएं अथवा या तार्ई से अलग। इसलिए पूरे प्रदेश को एक ही राजनीतिक या सामाजिक नजरिये से देखना भी उचित नहीं होगा।

बस्ती जैसे जिलों में भी चुनावी बहस केवल बड़े राजनीतिक नारों तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। यहां सड़क, रोजगार, स्वास्थ्य सेवाएं, शिक्षा, कृषि, बाढ़ और जलमयार, यातायात तथा स्थानीय उद्योग जैसे मुद्दे सीधे लोगों के जीवन से जुड़े हैं। जनता के लिए यह ज्यदा महत्वपूर्ण है कि उसके क्षेत्र में कौन-सा काम हुआ, कौन-सी समस्या अभी बाकी है और आने वाले समय में उसके समाधान की क्या योजना है।

जातीय समीकरण चुनावी राजनीति का हिस्सा हैं और उन्हें पूरी तरह नजरअंदाज भी नहीं किया जा सकता। लेकिन लोकतंत्र में मतदाता केवल किसी सामाजिक पहचान का हिस्सा नहीं होता। उसके सामने अपने परिवार, रोजगार, शिक्षा, सुरक्षा और भविष्य से जुड़े व्यक्तिगत सवाल भी होते हैं। इसलिए यह मान लेना कि कोई पूरा समाज केवल एक ही मुद्दे या पहचान के आधार पर मतदान करेगा, मतदाता की स्वतंत्र राजनीतिक सोच को कम करके आंकना होगा।

2027 का चुनाव राजनीतिक दलों के लिए यूपी परीक्षा लेकर आया कि वे सामाजिक समीकरणों के साथ जगहिति के मुद्दों को किस तरह जोड़ते हैं। गठबंधन बनेंगे, उम्मीदवारों का चयन होगा, घोषणाएं होंगी और चुनावी दौरा का दौर भी चलेगा। लेकिन अंततः जनता के सामने यह सवाल रहेगा कि उसके जीवन में क्या बदला आए और आगे क्या बदलने की टोस योजना है।

लोकतंत्र की मजबूती इसी में है कि चुनाव केवल जाति, धर्म या भावनात्मक नारों की प्रतिस्पर्धा न बनकर नीतियों और कामकाज पर चर्चा का अवसर भी बने। राजनीतिक दलों को भी जनता को केवल मतदाता समझने के बजाय सवाल पूछने वाले नागरिक के रूप में देखना होगा। चुनाव की तारीख नजदीक आने के साथ यह बहस और तेज होगी कि प्रदेश की राजनीति में कौन-सा मुद्दा सबसे ज्यादा प्रभाव डालेगा। राजनीतिक दल अपने-अपने हिस्से से जनता के सामने मुद्दे रखेंगे। कोई विकास को अपनी उपलब्धि बताएगा, कोई सरकार की कमियों को प्रमुखता देगा और कोई सामाजिक प्रतिनिधि त्व तथा हिस्सेदारी को चुनावी बहस का केंद्र बनाने की कोशिश करेगा।

अब तक विरोधियों से ताकत पाते रहे प्रधानमंत्री मोदी क्या चक्रव्यूह तोड़ पाएंगें?



प्रो. संजय द्विवेदी

“मोदी हैं तो मुमकिन हैं” यह सिर्फ नारा नहीं है, भरोसा है। प्रहानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने 25 सालों के सत्ताकाल में इसे अर्जित किया है। चुनावों में इस भावना को मोदी की गारंटी कहा गया। यही विचार था जो मोदी को संगठन और विचार से बड़ा बना देता है।

आज मोदी एक विचार बन चुके हैं। वह विचार है स्वको के साथ लेकर इस देश को विकसित भारत बनाने का सपना। इस मायने में वे सपनों के सीढ़ागर भी हैं। ‘अच्छे दिन आने वाले हैं’ से लेकर ‘सबका साथ, सबका विकास, सबका प्रयास, सबका विश्वास’ तक यह सातत्य दिखाता है। यह बिस्कुल नई राजनीतिक संस्कृति है और उसका सतत विकास है ऐसा लगता है कि सुशासन, विकास और संवाद तीन स्तरों से सत्ता ने सब कुछ साध लिया है। आलोचना हर सरकार की होती है, होने भी चाहिए। कहीं कुछ भी पूर्ण नहीं है। किंतु दिल्ली में 2014 के बाद आई सरकार ने न सिर्फ अपनी धमक बनाई वरन बदलता हुए हिंदुस्तान



भी दिखा। यह अलग ही हिंदुस्तान था। जो आकांक्षाओं से भरा-पूरा था। अवसाद की चारद को फेंक कर कुछ नयाहता था। आगे बढ़ना चाहता था।

मोदी ऐसे हैं जिन्होंने राजनीतिक तंत्र और नेताओं की इज्जत थोड़ी बढ़ाई भी है। इसके पूर्व का समय याद कर तो वह ‘नीतिगत जड़ता’ का समय था, घोटालों की खबर से हलकाजान देश भ्रष्टाचार के विरुद्ध सड़कों पर था। दिल्ली के ईरुई बगी पैटी (आप) सत्ता में चुकी थी। तभी मोदी उलमीं का चेहरा बनकर उभरे और लोगों ने उनमें राष्ट्रनाटक की छवि देखी। उनका साधारण अतीत भरोसे दे रहा था कि उन्हें लोगों के बंद पता है और वे संसदी के ठोस और वाजिब हल निकालेंगे। इस भरोसे ने तीन



बार उन्हें केंद्र की सत्ता पर न सिर्फ बिठाया बल्कि तमाम राज्यों में भी भाजपा और राजग की सरकारें बनीं, जिन्हें डबल इंजन की सरकार कहकर संबोधित किया गया। गुजरात और दिल्ली के सत्ता साकेत में लगभग ढाई दशक पूरे कर चुके नरेंद्र मोदी और उनकी सरकार को लेकर इस समय विपक्ष और समाज के कुछ हिस्से हमलावर हैं।

कुछ मुद्दे तो खुद उनकी सरकार ने दिए तो कुछ विपक्ष प्रयाजित विवाद भी हैं। जिसमें पेपरलीक, एनटीए की नाकामी, इंधनाल और चुनाव आयोग जैसे मुद्दे हैं। नरेंटव की जंग में मोदी का मुकामला नहीं, किंतु हर बार मोदी नहीं होता। कई बार अतिशयान्वितवास भी नुकसानदायक होता है। जनता सब कुछ कर सकती है, किंतु अहंकार



स्वीकार नहीं करती। सच तो यह है कि विपक्ष के खिरावर और आपसी खींचतान के बाद भी सरकार न तो सदन चला पाई न सामने से उठ रहे सवालों के उत्तर दे पाई। ऐसे में सवाल यह उठता है कि क्या मोदी थक गए हैं या वे फिर गए हैं?

सच्चाई तो यह है कि मोदी और उनकी पार्टी के संगठन का मुकाबला करने की स्थिति में इस समय कोई दल या राजनीतिक समूह नहीं है। भाजपा अब पुरानी पार्टी नहीं रही। इस दौर में उनका जो भीगोलिक और सामाजिक विस्तार हुआ है, वह अमूर्तपाई है। इसके भरोसे ही वह तीन बार केंद्रीय सत्ता में आ सकी, जिसमें दो बार उस पूर्ण बहुमत मिलता तो तीसरी बार भी उसने आत्मविश्वास से भरकर सहयोगियों के साथ सरकार बना ली। सत्ता

विरोधी रुझान के बाद भी भाजपा का मुख्य प्रतिद्वंदी दल कांग्रेस 100 सीटों का आंकड़ा पार नहीं कर सका। बावजूद इसके इस चुनाव परिणाम से विपक्ष में यह भरोसा तो बना कि भाजपा के अश्शमेध के रथ को रोकना जा सकता है। अत्यंत की सरकार होने के बाद भी केंद्र की सरकार भरोसे से भरी है। बड़े फंसले हो रहे हैं। बंगाल के चुनावों की असंभरी सी दिख रही जीत ने भाजपा के कांडर में आत्मविश्वास भरा है।

इस भरोसे में असम की जीत तो संयुक्त है भी। अब पंजाब और उत्तर प्रदेश के मदान में डटी भाजपा को यह साबित करना है कि अभी वह चुकी और थकी नहीं है। पंजाब में बहुत काजीर खिलारही होकर भी वह मैदान को जीतने के लिए जिस तरह उत्तरी है, वह बात साबित करती है कि उसका यह भरोसा आकरण तो बिस्कुल नहीं है। नई नवेली आम आदमी पार्टी की सरकार वहां (पंजाब में) दूसरे संघर्ष में बन सकती है तो कोई कारण नहीं भाजपा भी ऐसे संघर्ष देखे।

वहीं उत्तर प्रदेश में तो उसके पास योगी आदित्यनाथ जैसा फासर बड़ा लीडर है, जिसके पास 10 सालों का सुनहरा अतीत है। सरकार के नेता पर कोई दाग नहीं है, गुंडों पर लगाम है, सरलस्य कानोनीनी है।

यानी उत्तर प्रदेश में बहुत कुछ बदल गया है। फिर क्या कारण हैं कि नरेंद्र मोदी को लेकर तरह-तरह की बातें हो रही हैं। कई जातीय समूह उत्तर पर हमलावर हैं। जबकि इन समूहों द्वारा उठाए जा रहे आखण

जैसे विषयों पर राजनीतिक दलों की आम सहमति है। कोई दल इस विषय को छू नहीं सकता। ‘समीक्षा’ जैसे शब्द पर भी राजनीतिक दल काफ़ा उठते हैं। इस विषय पर मोदी निशाने पर हैं। हालांकि यह ज्यादातर जंग आनलाईन माध्यमों पर ही लड़ी जा रही है किंतु समाज में इसका जहर नहीं फैल रहा है, यह कहना गलत होगा। इस बीच यूपीसी गाइडलाईस ने अलग कबाड़ किया। इससे मोदी विरोधियों को आग उगलने का मौका मिला। यह तो भला हो सुप्रीम कोर्ट का कि उसने इन प्रावधानों को रोककर सरकार की लाज बचा ली। सामाजिक समरसता के लिए यह सारे विवाद घातक है, किंतु राजनीति का लक्ष्य संपन्न अगर समाज को वांटकर ही होता हो तो क्या किया जा सकता है? इसके साथ ही शिक्षा नंजी धर्मद प्रथा को बंद समय तक झेलते रहना भी सरकार के विरुद्ध गया, अतंतः प्रभान तितवट्टों की आनावश्यक संस्ती राजनीति के शिंकार लेकर विदा हो गए। इससे गुमाना और जनाधारहीन नई नवेली ‘काक्रोच जनता पार्टी’ आनावश्यक चर्चा में आ गई।

इस सबके बाद भी मोदी और भाजपा की शक्ति को कम आंकना गलत होगा। योगी आदित्यनाथ, इन्हन विश्वशर्मा, शुभेंद्र अहिकारी, मोहन यादव, विश्वदेव साय, नायब सिंह सेठी, मोहन मंजी, देवेंद्र फडनवीस, सनात चौधरी जैसी मुख्यमंत्रियों की टीम को कम आंकना नासम्झी होगी।

मोदी प्रस्ताव पर रूस-यूक्रेन

—नीरज कुमार दुबे—

चार साल से ज्यादा समय से जंग लड़ रहे रूस और यूक्रेन के मोर्चे भले आज भी आमने-सामने हों, लेकिन शांति के सवाल पर दोनों तरफ से निकली आवाज पहली बार एक ही दिशा में जाती दिखाई दी है। और यह दिशा दी है भारत के प्रहानमंत्री नरेंद्र मोदी ने। यूक्रेन के विदेश मंत्री एंड्री सिविला ने भारत के प्रस्ताव को युद्ध समाप्त करने के लिए साक्ष्य में आने वाले प्रस्तावों में सबसे व्यापक बताया है। दूसरी तरफ रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने भी खुलकर कहा कि प्रहानमंत्री मोदी लगातार इस संघर्ष को खत्म करने का सवाल उठाते रहे हैं और उनके पास दोनों पक्षों को स्वीकार्य समााण का लिए ‘बहुत अच्छे विचार’ हैं।

देखा जाये तो युद्ध के मैदान में एक-दूसरे पर हमला कर रहे रूसोंको और कौी की तरफ से आई इन तिष्णियों ने भारत की उस कूटनीतिक पहल को अवाकक केंद्र में ला दिया है, जो अब तक बंद कमरों की बातचीत से निकलकर अंतरराष्ट्रीय मंच पर दिखाई देने लगी है।

यह घटनाक्रम इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि पहली बार यूक्रेन की ओर से भारत की पहल को सार्वजनिक रूप से इतनी स्पष्ट मान्यता दी गई है। सिविला के अनुसार भारत ने पहली बार इस प्रक्रिया में भूमिका निभाने की इच्छा का संकेत दिया है। यूक्रेन ऊर्जा क्षेत्र और काला सागर में युद्धविमान पर विचार करने के तयार है, बरतें ऊर्जा तथा बदरगाह बांधे पर हमले भी रुकें। साक्षा ही कौीय ने संकेत रेखा पर विना शर्त युद्धविराम के विकल्प की भी खुला बताया है।

उधर, भारत की पहल की व्यापकता का सबसे बड़ा संकेत यही है कि यह केवल गोलाबारी रोकने तक सीमित नहीं दिखती। इसमें ऊर्जा सुरक्षा, बदरगाहों, काला सागर में व्यापार और कृषि आपूर्ति जैसे उन क्षेत्रों को जोड़ने की कोशिश है, जिनका सीधा संबंध युद्ध से बाहर पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था और खाद्य सुरक्षा से है। वहीं तुर्किये और मिस्र की पहल मुख्यतः काला सागर तथा अजल नियाँत से जुड़ी बताई गई है, जबकि अमेरिका की पहल ऊर्जा प्रतिस्पर्धा पर हमले रोकने पर केंद्रित है।

यही पुतिन का बयान बेहद महत्वपूर्ण हो जाता है। उन्होंने कहा कि मोदी रूस के साथ अच्छे और मित्रपूर्ण संबंध होने के बावजूद लगातार युद्ध समाप्त करने का प्रश्न उठाते हैं और दोनों पक्षों के लिए



स्वीकार्य समाधान खोजने में उनकी गहरी रुचि है। पुतिन ने मोदी के शक्तिपूर्ण तरीके से और जल्द से जल्द संघर्ष समाप्त करने के प्रस्तावों के लिए आभार भी जताया।

देखा जाये तो मोदी की यह भूमिका अवाकक बधा नहीं हुई। वर्ष 2022 में ही उन्होंने कहा था कि ‘यह युद्ध का दुगुने नहीं है’। जुलाई 2024 में रूस की यात्रा के दौरान उन्होंने साफ कहा था कि बम, नैटुओ और गोलियों के बीच शांति वाला सफल नहीं हो सकती और सभामान्य युद्धभूमि ही निकलेगा। 31 अगस्त 2026 को बिश्केक में पुतिन से मुलाकात के दौरान भी उन्होंने ‘अतंत युद्ध’ से ‘युद्ध की समाप्ति’ की दिशा में बढ़ने की बात कही थी।

यही इस पूरे घटनाक्रम का सबसे बड़ा साक्ष्यक संकेत प्रिया है। रूस से भारत के गहरे संबंध हैं, जबकि यूक्रेन के साथ भी भारत ने संवाद के रास्ते खुले रखे हैं। ऐसे समय में यदि भारत रूस तक अपनी बात पहुंचा सकता है और यूक्रेन भी उसकी पहल को व्यापक प्रस्ताव मानता है, तो नई दिक्कत के पास संवाद के लिए एक ऐसा कूटनीतिक स्थान बनता है जो कई पश्चिमी शक्तियों के लिए उपलब्ध नहीं है।

दूसरी ओर, इसी कूटनीतिक हलचल के बीच रूस ने अपनी सैन्य शक्ति का भी जबरनस्त यूद्धविमान भेजे हैं। दो अक्टूबर को पुतिन ने यूराल क्षेत्र में चल रहे सेंटर-2026 सैन्य अभ्यास के अंतिम चरण का निरिक्षण किया। रूस के अनुसार इस अभ्यास में लगभग 47 हजार सैनिक, 11 प्रशिक्षण क्षेत्र और कैस्पियन सागर शामिल रहे। अतिम चरण में करीब छह हजार सैनिक उतरे। चीन, बेलारूस, किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान, मोंगोलिया और पाकिस्तान सहित कई देशों की सेनाएं इसमें शामिल रही तथा 56 देशों के प्रतिनिधियों ने अभ्यास देखा।

इस अभ्यास में रूस ने करीब 700 सैन्य उपकरणों, 60 से अधिक



मानवरहित विमानों और 60 से अधिक कै रोबोटिक प्रणालियों का इस्तेमाल दिखाया। पुतिन ने नए जेट-वालिंत जेराम युद्धविमान विमानों का भी निरीक्षण किया, जिनका इस्तेमाल रूस यूक्रेन युद्ध में कर चुका है। रूस की दुगुने रहने से कि मारको युद्ध से मिले अनुभव को अपनी पीढ़ी की युद्ध क्षमता में बदल रहा है। इसलिए तस्वीर बेहद दिलचस्प है। एक तरफ रूस युद्ध के मैदान में अपनी सैन्य क्षमता, मानवरहित युद्ध प्रणाली और दूर तक मार करने वाली तकनीक का प्रदर्शन कर रहा है वहीं दूसरी तरफ उसी रूस के राष्ट्रपति भारत के प्रहानमंत्री के युद्ध समाप्त करने वाले विचारों की सार्वजनिक रूप से प्रशंसा कर रहे हैं। यही भारत की कूटनीति की असली परीक्षा और संभावित ताकत दोनों हैं।

लेकिन रास्ता आसान नहीं है। यूक्रेन में रूसी हमले जारी हैं, ऊर्जा ढांचा लगातार निशाने पर है और काला सागर में सुरक्षा तथा अनाज आपूर्ति का संकट बना हुआ है। हालिया रिपोर्ट के अनुसार रूस और यूक्रेन दोनों एक-दूसरे के ऊर्जा तथा ईंधन बांधे पर हमले कर रहे हैं। ऐसे माहौल में भारत की चुनौती बहुत प्रस्ताव देने की नहीं, बल्कि प्रस्ताव को युद्धभूमि से वास्तविक तट पहुंचाने की है। यदि नई दिल्ली रूस और यूक्रेन दोनों से संवाद कायम रखते हुए ऊर्जा, कृषि, काला सागर और अंततः युद्धविमान को एक ही ढांचे में जोड़ पाएगी है तो यह कोशिश नहीं होगी, वह बलतीली व्यवस्था में भारत की बड़ती कूटनीतिक भूमिका का बड़ा प्रमाण बन सकता है। फिलहाल इतना जरूर स्पष्ट है कि मोदी की शांति पहल को अब केवल भारतीय दया नहीं कहा जा सकताय यूक्रेन ने उसे व्यापक प्रस्ताव माना है और पुतिन ने स्वयं उसके पीछे मोदी की लातारत कोशिशों को स्वीकार किया है।

— ललित गर्गे—

कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानी एआई आज मानव सभ्यता की सबसे प्रभावशाली तकनीकी उपलब्धियों में शामिल है। चिकित्सा, शिक्षा, अंतरिक्ष, वित्तान, कृषि, उद्योग और प्रशासन से लेकर रोजमर्रा के जीवन तक इसके उपयोग ने विकास की गति को अमूर्तपाई बनाया है। लेकिन जितनी तेजी से एआई की क्षमताएं बढ़ रही हैं, उतनी ही गंभीरता से उसके दुरुपयोग और नियंत्रण से बाहर जने के जोखिमों पर भी विचार करना होगा। सितंबर 2026 में संयुक्त राष्ट्र के स्वतंत्र अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक पैनल ने भी चेतावनी है कि एआई की क्षमताओं की गति के मुकाबले उसके सुस्थित उपयोग के नियम पीछे छूट रहे हैं और अधिक स्वायत्त एआई एप्लेटों के साथ मानव नियंत्रण बनाए रखना एक वास्तविक चुनौती बन रहा है। इसी संदर्भ में माइक्रोसॉफ्ट के सह-संस्थापक बिल गेट्स की हालिया चेतावनी विशेष महत्व रखती है। उन्होंने कहा है कि एआई गलत हाथों में पड़ने पर अत्यंत व्यापक जगनाह का माध्यम बन सकता है और सरकारों को इसके लिए प्रभावी नियमन की दिशा में काम करना चाहिए। गेट्स की धिता केवल भविष्य की किसी कल्पनिक आशंका पर आधारित नहीं है, एआई के दुरुपयोग के कुछ छोटे उदाहरण सामने आने लगे हैं। सबसे महत्वपूर्ण बदलाव एआई एप्लेट्स के रूप में दिखाई दे रहा है। पापफोरि एआई मुद्रातः प्रश्नों के उत्तर देता था, लेकिन एआई इंटरनेट पर जा सकता है, वेबसाइट खोल सकता है, कोड लिख सकता है, अनुचित तथ्य पूरा करने के लिए अनेक चरणों में स्वयं कार्रवाई कर सकता है। यही क्षमता उपयोगी होने के साथ जोखिमपूर्ण भी है। सितंबर 2026 ने ओपेनएआई से संबंधित एक घटना का उल्लेख किया, जिसमें परीक्षण के दौरान एआई एप्लेट्स ने अलग-अलग प्रतिक्रियाओं को पार किया, अलग-अलग प्रतिक्रियाओं के बीच संपर्क किया और ओपेनएआई तथ्या हुगिंग फेंस की प्रणालियों के कुछ हिस्सों से समझौता किया। स्वतंत्र संस्था एमईटीआर की जांच के अनुसार एआई घटना में लगभग 1,200 एप्लेट्स ने 70,000 से अधिक संदेश और फाइलें साझा की तथा लगभग 700 एप्लेट्स हुगिंग फेंस पर हुए हमले में शामिल हुए। यहां साफ़ पानी जरूरी है। इन घटनाओं को यह प्रमाण मान लेना कि एआई निश्चित रूप से मानव नियंत्रण से बाहर हो गया है, तथ्यात्मक रूप से सही नहीं होगा। ये नियंत्रित परीक्षण और सुरक्षा-मूल्यांकन के दौरान सामने



आई घटनाएं थीं। लेकिन इनका महत्व इस बात में है कि अधिक समय एप्लेट जंग जटिल तथ्य पार करने की कोशिश करते हैं, तो वे उन सवालों का इस्तेमाल कर सकते हैं जिनकी कल्पना उनमें नितार्ताओं ने नहीं की थी। स्वयं ओपेनएआई ने भी एप्लेट्स के इंटरनेट उपयोग, बाहरी सामग्री से होने वाले प्रिंसेट इजेशन और डेटा चोरी जैसे जोखिमों का अधिक स्वीकार की है। एआई के सैन्य दुरुपयोग की आशंका भी अब केवल संभावित नहीं रह गई है। सितंबर 2026 में फ्लोरिदा ने बताया कि डमन में हूती-नियंत्रित क्षेत्र से जुड़े लोगों ने उसके क्वाउड एआई का इस्तेमाल निर्देशित रॉकेट और मिसाइलों के मार्गदर्शन, नियंत्रण और नेविगेशन से जुड़े सॉफ्टवेयर विकसित करने के प्रयास में किया। कंपनी के अनुसार सुरक्षा उपायों ने अनेक अनुश्रुतों को रोक, लेकिन उपयोगकर्ताओं ने अपनी मर्मा पिछाकार और काम को अनाम-अनाम सत्रों में वांटकर कुछ सुरक्षा अवरोधों को पार करने की कोशिश की। उलकास रिपोर्ट के अनुसार हथियार-विकास का प्रयास सफल नहीं हुआ, हालांकि एक निर्देशित रॉकेट का परीक्षण विफल हुआ और उसका पैदा एआई से उसकी सशस्त्र सम्भनने का प्रयास किया गया। यही यह बिंदु है जहां एआई और पार विविध हथियारों के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर सामने आता है। एआई स्वयं कोई मिसाइल या बम नहीं है, लेकिन वह ज्ञान, डिजिटल, कांफिग, विश्लेषण और निर्णय प्रणालियों को बहुत तेज कर सकता है। किसी गैर-राज्य संपन्न, अराजकी समूह या आतंकवादी संगठन को यह अत्यंत सक्षम एआई तट पहुंच निशाने पर तो वह ऐसे तकनीकी कार्यों को अधिकांशतः कम समय और कम विशेषज्ञ मानव संसाधन में करने का प्रयास कर सकता है, जिनके लिए पहले बड़ी तकनीकी टीम की आवश्यकता होती थी। इसलिए एआई का प्रयुक्त को केवल सॉफ्टवेयर उद्योग का विषय समझना पर्याप्त नहीं है। एआई को वैश्विक सुरक्षा का भी विषय बन चुका है। खराब कथल युद्ध तक सीमित नहीं है। साइबर अपराध, बैकिंग धोखाधड़ी, परीक्षण की चोरी, फर्जी आवाज और वीडियो, सामाजिक अभियांत्रिकी तथा बड़े धमने

पर गलत सूचना फैलाने में एआई का इस्तेमाल हो सकता है। संयुक्त राष्ट्र के आकलन में भी साइबर हमलों, वित्तीय धोखाधड़ी, सोशल इंजीनियरिंग और डीपफेक को एआई से जुड़े प्रमुख जोखिमों में गिना गया है। आज यदि किसी व्यक्ति की आवाज की ह्यूह नकल करके उसके परिवार से ऐसे गंभीर जा सकते हैं, किसी अिहंकारी या संस्था का नकली वीडियो बनाया जा सकता है अथवा बांध पैमाने पर स्वाचालित साइबर हमले किए जा सकते हैं, तो डिजिटल समाज में विश्वास की बुनियाद ही प्रभावित हो सकती है। भारत के लिए यह धिता और अधिक महत्वपूर्ण है। करों भारतीय बैकिंग, डिजिटल भूतानात, सरकारी संसाधनों, स्वास्थ्य सेवाओं, शिक्षा और व्यापार के लिए डिजिटल प्रणालियों पर निर्भर हैं। इसलिए एआई-आधारित साइबर हमले का प्रभाव किसी एक कंप्यूटर या संस्था तक सीमित नहीं रह सकता। भारत के इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने भी साइबर सुरक्षा को उभरती एआई, मशीन लर्निंग और अन्य तकनीकों के साथ जुड़ी चुनौती के रूप में रेखांकित किया है तथा सीईआईटी-इन जैसी संस्थागत व्यवस्थाओं का उल्लेख किया है। भारत को एआई के विकास में पीछे नहीं रहना चाहिए, लेकिन इसके साथ साइबर सुरक्षा, डेटा संरक्षण, महत्वपूर्ण डिजिटल अवसरबना की सुरक्षा और आपातकालीन प्रतिक्रिया क्षमता को सुमान गति से मजबूत करना होगा। दूसरी ओर, जुड़ी चुनौती वैश्विक शक्ति-संतुलन की है। एआई पर नियंत्रण यदि कुछ देशों या कुछ बड़ी निजी कंपनियों तक सीमित हो गया, तो तकनीकी क्षमता आर्थिक और सामरिक शक्ति का नया आधार बन सकती है। अमेरिका और चीन जैसे बड़े तकनीकी एवं सैन्य शक्तियों के बीच एआई प्रतिस्पर्धा पहले ही वैश्विक राजनीति का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुकी है। इसलिए एआई का प्रश्न केवल यह नहीं है कि इन देशों के बीच शक्तिशाली मंडल बनाया, प्रश्न यही है कि इन मंडलों की सीमाएं कौन तय करेंगी, उनके राजनीतिक स्वतंत्र व्यवस्था की संरचना और किसी गंभीर जोखिम की स्थिति पर जिसके पास इस्तेख्य करने की वैध शक्ति होगी।

संघ कार्यकर्ता की पत्नी और बेटी ने डीजल छिड़क किया आत्मदाह का प्रयास



संवाददाता-देवरिया।

जिले के लार थाना क्षेत्र के रक्शा के भीखम छपरा गांव में संघ कार्यकर्ता की हुई लाठी-छंडे से पीट कर हत्या के मामले में दो दिन गुजर जाने के बाद भी हत्यारोपियों की गिरफ्तारी पुलिस नहीं कर पाई है। शनिवार की सुबह संघ कार्यकर्ता की पत्नी व बेटी ने डीजल छिड़क आत्मदाह करने का प्रयास किया। हालांकि दरवाजे पर तैनात पुलिस ने गैलन छीन लिया। साबू भी समझ-झूझकर उन्हें शांत कराया। पुलिस अधिकारी जयद्वी आरोपियों की गिरफ्तारी कर लेने का दावा कर रहे हैं।

लार थाना क्षेत्र की ग्राम पंचायत रक्शा के भीखमछपरा गांव निवासी रामेश्वर तिवारी (50) पुत्र स्व. जयगमल तिवारी आरएफएस के समस्तता प्रमुख थे। गुरुवार को घर

के सामने रास्ते पर स्पीड ब्रेकर बनाने की मांग को लेकर हुए विवाद में लाठी-छंडे से पीट कर उनकी हत्या कर दी। संघ कार्यकर्ता की हत्या की वारदात के बाद पुलिस महकमे में हड़कण मच गया। मामले में दोषी मिलने पर थानेदार राकेश सिंह, दरोगा राममूल, बीट आरक्षी प्रीतम भारती और चंद्रमान को दोषी मानते हुए निलंबित कर दिया गया है, जबकि मामले में संजय तिवारी पुत्र रघुनारायण तिवारी, दीपक तिवारी व प्रजाल तिवारी पुत्रगम स्व. विनोद तिवारी, अभिनव तिवारी व आदित्य तिवारी पुत्रगम संजय तिवारी निलंबित तिवारी पुत्र उत्तम तिवारी व 10 अज्ञात के विरुद्ध हत्या का केस दर्ज है। दो दिन का समय गुजर जाने के बाद भी आरोपियों की पुलिस गिरफ्तारी नहीं कर पाई है।

बेटी-प्रेमी की हत्या में पिता-पुत्र को उन्नीसकैद, दोनों पर 60-60 हजार रुपए जुर्माना



संवाददाता-गोण्डा।

शनिवार शाम करीब 5:30 बजे जिला जज दुर्गा नारायण सिंह की अदालत में प्रेमी-प्रेमिका की हत्या के मामले में पिता-पुत्र को उन्नीसकैद का सजा सुनाई। दोनों पर 60-60 हजार रुपए का अर्थदंड भी लगाया गया। सजा के बाद दोनों को जेल भेज दिया गया। मामला धानपुर थाना क्षेत्र के मेहनती गांव का है। 21 अगस्त 2023 की रात कुमारमन ने अपनी 18 वर्षीय बेटी आरती चौधरीया को गांव के ही 19 वर्षीय सतीश चौधरीया के साथ घर में आपत्तिजनक स्थिति में देख लिया था। इसका बाद उसने अपने देह शवाम कर को बुलवाया। पुलिस जांच के अनुसार दरवाजे में सतीश की पीट-पीटकर हत्या कर दी। प्रेमी को बचाव आर्डर जारी की भी हत्या कर दी गई।

पुलिस के अनुसार सतीश के शव को घर से कुछ दूरी पर ले जाकर जंगल के खेत में फेंक दिया गया था। 22 अगस्त 2023 की सुबह करीब 8 बजे आरोपियों ने खेत में शव देखा। इसके बाद धानपुर पुलिस को सूचना दी गई।

जांच में सामने आया कि आरती के शव को करीब 60 किलोमीटर दूर अयोध्या ले जाया गया था। वहां सारंग नदी के तट पर रमणग घाट के पास रात में शव दफन कर दिया गया था। पुलिस ने 23 अगस्त 2023 को कुमारमन और राकेश राम को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। पुलिस जांच के अनुसार आरती के शव को सतीश से प्रेम करती थी। वह उससे शादी करना चाहती थी। परिवार के लोग इस रिश्ते का विरोध कर रहे थे। इसी दौरान 21 अगस्त की रात सतीश आरती से मिलने उसके घर पहुंचा था।

असिस्टेंट डिप्टी कांस्टेबल कुंजलाल तिवारी ने बताया कि मामले की सुनवाई करीब 1139 दिन चली। अदालत ने साक्ष्य का अवलोकन करने के बाद दोनों आरोपियों को उन्नीसकैद का सजा सुनाई। उन्होंने बताया कि जीजीसी क्रिमिनल सेशन शुक्ला की पैरवी के साथ मौजिस्टीरल सेशन, कोर्ट मोहरीह देव के पैरवार मारकंडेय सिंह और धानपुर थाना के कानूनकार कांस्टेबल सुप्रताप की ओर से भी मामले की लगातार पैरवी की गई।

पुलिस हिरासत में आरोपी की मौत, डेढ़ किंवदंतल गांजा के साथ पकड़ा गया था



संवाददाता-देवरिया।

जिले के खुबुंदू थाने में गांजा के साथ गिरफ्तार चालक की अचानक शनिवार की सुबह सदिग्य परिस्थिति में तबीयत बिगड़ गई। उपचार के लिए तत्काल पुलिस ने माहौल देवरहा बाबा मेडिकल कलेज पहुंचाया, जहां चिकित्सक ने मृत घोषित कर दिया। पुलिस करंटडी में डीसीएम चालक की मौत की सूचना के बाद पुलिस महकमे में खलबली मच गई। एएसपी आनंद कुमार पांडेय, एएसपी सुनील कुमार कर्षां थानों की पुलिस के साथ खुबुंदू थाने पहुंचे और घंटों प्रकरण में जानकारी दी। उधर पुलिस की तरफ से इसको लेकर काफी आदि जांचक सूचना नहीं जारी की गई। दोपहर में एएसपी खुबुंदू थाने पहुंचे।

अमरोहा जिले के अमरोहा देहात थाने के ग्राम सोनडाला फरीदपुर निवासी बृजपाल उपाध्याय (47) डीसीएम चालक का काम करते थे। शुक्रवार को नूनखार रोड से खुबुंदू पुलिस ने उनको डीसीएम को रोक कर तलाशी ली तो उसने से लगभग डेढ़ किंवदंतल गांजा बरामद किया गया। इसके बाद पुलिस ने बृजपाल को हिरासत में ले लिया। शनिवार की सुबह बृजपाल की सदिग्य परिस्थिति में स्थिति बिगड़ गई। उपचार के लिए

समाधान दिवस का बहिष्कार, लेखपालों ने दी आंदोलन की चेतावनी



संवाददाता-महाराजगंज।

वर्षों से लंबित सेवा संबंधी मांगों पर शासन की ओर से ठोस निर्णय नहीं होने से नाराज लेखपालों ने शनिवार को जिलास्तरिय तहसील समाधान दिवस का बहिष्कार कर दिया। सदर तहसील में बरना देह लेखपालों ने शासन के खिलाफ नाराजी जताई। जिलास्तरिय सूरज कुमार ने लेखपालों ने मुख्यमंत्री के संबोधित आठ सूचीय मांग मंत्र पर एएसडीएम को सांपा। लेखपाल संघ ने कहा कि लगातार बढ़ते कार्यभार के बावजूद सुविधाएं व लंबित मांगों उस की तस हैं। चेतावनी दी कि मांगों पर शीघ्र कार्रवाई नहीं हुई तो 17 अक्टूबर से प्रवेशार्थ में समूहों का बहिष्कार किया जाएगा। जिलास्तरिय सूरज कुमार ने कहा कि राज्य प्रशासन की जिम्मेदारी लगातार बढ़ाई जा रही है, लेकिन लेखपालों की मौजूदा सुविधाओं व सेवा संबंधी मांगों पर तब समय से कोई ठोस पहल नहीं हुई। इससे कार्यभारों में नाराजी बढ़ती जा रही है। सच ने 28 सी ग्रेड पे लागू करने व वेतन विसंगति दूर करने की मांग प्रमुखता से उठाई। आठ वर्ष से लंबित

सेवा शिविरों से पात्रों तक पहुंचेगा योजनाओं का लाभ -अजय सिंह



संवाददाता-बस्ती।

बस्ती। सरकारी योजनाओं का लाभ लेने के लिए अब ग्रामीणों को अलग-अलग विभागों के चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे। एक ही स्थान पर विभिन्न विभागों की सेवाएं और योजनाओं से जुड़ी सुविधाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से शनिवार को विकासखंड परसरामपुर के समगार में पांच दिवसीय बहुउद्देशीय सेवा शिविरों का शुभारंभ विधायक अजय सिंह ने किया। 03 से 07 अक्टूबर तक चलने वाले इन शिविरों के माध्यम से पात्र लाभार्थियों को शासन की योजनाओं से जोड़ने और उनकी समस्याओं के समाधान का प्रयास किया जाएगा।

विधायक ने विभिन्न विभागों की ओर से लगाए गए स्टॉलों का निरीक्षण किया और अधिकारियों को योजनाओं के क्रियान्वयन एवं विभागीय सेवाओं की प्रगति की जानकारी दी। उन्होंने क्षेत्रवासियों से संवाद कर उनकी समस्याएं और आवश्यकताएं जानी तथा अधिकारियों को पात्र लोगों तक योजनाओं का लाभ प्रभावी ढंग से पहुंचाने के निर्देश दिए। इस दौरान विधायक ने गवंधी महिलाओं की गोद भराई की रसम पूरी कराई। वहीं कुलुषित बच्चों को पोषण सामग्री तथा किताबों को बीज वितरण समिति ने किया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र

लापरवाही के आरोप में खुबुंदू थाना प्रभारी समेत तीन निलंबित संवाददाता-देवरिया। खुबुंदू थाने में एनडीपीएस एक्ट के तहत गिरफ्तार चालक की मौत के मामले में पुलिस अधिकारी ने प्रभारी निरीक्षक राहुल सिंह व दो आरक्षियों का निलम्बित कर दिया है। एएसपी ने यह कार्रवाई घोर लापरवाही, उदासीनता व स्वेच्छाचारिता बरतने के आरोप में की है। गौरतलब है कि अमरोहा जिले के अमरोहा देहात थाने के ग्राम सोनडाला फरीदपुर निवासी बृजपाल उपाध्याय (47) डीसीएम को रोक कर तलाशी ली तो उसने से लगभग डेढ़ किंवदंतल गांजा बरामद किया था। इसके बाद पुलिस ने उसे हवालात में डाल दिया था।

एक छत के नीचे मिल रहा योजनाओं का लाभ -अनिल दुबे



संवाददाता-बस्ती।

अभियान के तहत लाखों समांगरों से शनिवार को पांच दिवसीय बहुउद्देशीय सेवा शिविर का शुभारंभ मुख्य अतिथि ब्लाक प्रमुख अनिल दुबे व विशिष्ट अतिथि भाजपा नेता एवं पूर्व ब्लाक प्रमुख ब्रह्मदेव यादव देवा ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय व रघुनाथ प्रसाद मुखर्जी के चित्र पर मान्यार्ण एवं दीप प्रज्ज्वलित कर किया। मुख्य अतिथि अनिल दुबे ने कहा कि अभियान के तहत लाभार्थियों को एक ही छत के नीचे विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ मिल रहा है। विशिष्ट अतिथि ब्रह्मदेव यादव देवा ने कहा कि गांव के अतिम व्यक्तित्व को बिना विचारों के योजनाओं का लाभ पहुंचाया जा रहा है। इसके बाद अतिथियों ने विभिन्न विभागों के

स्टॉलों का निरीक्षण किया। बाव विकास एवं पुष्पहार विभाग की ओर से अन्नप्राशन व गोद भराई कार्यक्रम आयोजित किया गया। शिविर में समाज कल्याण, दिव्यांग ग्राम सशक्तीकरण, स्वास्थ्य, निर्वाह, ग्राम विकास, कृषि, पशुपालन, मत्स्य, उद्योग एवं सेवायोजन, बैंकिंग, खाद्य एवं रसर, शिक्षा, कोशल राजस्व, श्रमिक पंजीकरण तथा पंचायती राज विभाग ने स्टाल लगाकर लोगों को योजनाओं की जानकारी एवं लाभ उपलब्ध कराया। कार्यक्रम का संचालन मंडल अध्यक्ष दुर्गा अग्रहरी ने किया। इस दौरान कुमार पात्र, पंकज पांडेय, इंद्र कुमार चौधरी, विजय शंकर मिश्र, सच्चिदानंद यादव, सीएम केपी आनंद सोनी, राहुल कुमार, डा. फैज वारिस, नंदलाल राम, मनोज कुमार सहित कर्मचारी मौजूद रहे।

अदालती नोटिस (हेतु सन्देशित करने की सूचना साधारण प्रारूप) न्यायालय-श्रीमान मुख्य राजस्व अधिकारी महोदय अयोध्या जनपद-अयोध्या माद सं-0202304230002547 माद सं-2647/2023 भारत प्रवाद बनाम

उपभूत सरकारी आदि बनाम-1- अनन्त प्रकाश 2. देवेन्द्र प्रकाश 3. रजनीश कुमार पुत्रगम गुरुचरण 4. अभिनय प्रकाश 5. आदित्य प्रकाश पुत्रगम अरुण प्रकाश समस्त निवासस्थान ग्राम रोहारी प्रमरतन पिथौरा राव तहसील बीकानपुर जनपद-अयोध्या

तारीख पेशी 13-10-2026 बुद्धि उपनिर्माणिक ने इस न्यायालय में आवेदन किया है कि अपराध अपराध एवम द्वारा चेतावनी दी जाती है कि आप इसे आदेश के खिलाफ हेतु सन्देशित करने के लिये 2026 के माह 10 के 13 दिवस को 10.00 बजे पूर्वार्ध में स्वयं या सम्पर्क रूपेण अनुरोध अपने अधिकारदार पर उपस्थित हो और ऐसा करने पर उक्त आवेदन एक पक्षीय रूप से नुमा जयेगा। मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा सहित आज सन 26 के माह के दिवस को निकाली गयी। दह हाकिम

नाबालिग के अपहरण और सामूहिक दुष्कर्म में तीन गिरफ्तार संवाददाता-महाराजगंज। चौक पुलिस ने नाबालिग लड़की के अपहरण एवं सामूहिक दुष्कर्म के मामले में अदालती नोटिस (हेतु सन्देशित करने की सूचना साधारण प्रारूप) न्यायालय-श्रीमान A.S.D.O. महोदय अयोध्या जनपद-अयोध्या माद सं-202404230112593 अशु यादव बनाम

राम पात आदि बनाम-1- राम पात 2. राम फूल 3. राम सुभाष पुत्रगम बरसाती 4. शारदा देवी पत्नी राम सुभाष परमरत निवासस्थान ग्राम उरुमरग अमसित तहसील सदर जनपद-अयोध्या

तारीख पेशी 13-10-2026 बुद्धि उपनिर्माणिक ने इस न्यायालय में आवेदन किया है कि अपराध अपराध एवम द्वारा चेतावनी दी जाती है कि आप इसे आदेश के खिलाफ हेतु सन्देशित करने के लिये 2026 के माह 10 के 15 दिवस को 10.00 बजे पूर्वार्ध में स्वयं या सम्पर्क रूपेण अनुरोध अपने अधिकारदार पर उपस्थित हो और ऐसा करने पर उक्त आवेदन एक पक्षीय रूप से नुमा जयेगा। मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा सहित आज सन 26 के माह के दिवस को निकाली गयी। दह हाकिम

वें बाधित तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने तीनों को शनिवार दोपहर निवासिया चौहान से मुखाबि की सुनवाई में पेश करने के लिए रवाना किया गया। पुलिस के अनुसार, 24 सितंबर 2026 को पीठिया के परिजनों की ओर से थाना चौक में सूचना दी गई थी कि उनकी नाबालिग पुत्री को कुछ लोग मोहरसासहित पर जबरन बेदाकर जाल की ओर ले गए और जान से भरने की धमकी दी। सूचना के आधार पर पुलिस ने मुकदमा-104/2026 में भीमपुत्र की धारा 137(2) और 351(3) के तहत मुकदमा दर्ज किया था। पुलिस ने तत्काल कार्रवाई करते हुए नाबालिग को बरामद कर लिया। पुलिस के मुताबिक, पीठिया के थाना 180 एवं 183 बीकानूरसहित के उत्तर दक्षिण स्थानों और मेडिकल रिपोर्ट के आधार पर गुरुजने में भीमपुत्र की धारा 137(2), गुरुजने में भीमपुत्र की धारा 137(2), गुरुजने में भीमपुत्र की धारा 137(2) तथा बिक्रमेश्वर की धारा 501/1 की बहाल की गई। इसके बाद आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस टीम सामाजिक डिवांगन पर लगातार दबिरे दे रही थी। इसी क्रम में 3 अक्टूबर को मुखबिरी से मिली सूचना के आधार पर चौक पुलिस ने निगरानी चौक से तीनों बाधित आरोपियों को गिरफ्तार किया। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान विक्रम पुत्र दुनाम, 28, राकेश पुत्र चमन (28) और दिव्य पुत्र नरू, 26 (नवमि) 28 नरसी, नरका बरसा, थाना चौक, महाराजगंज के रूप में हुई है।

शौच के लिए निकली महिला का 5 घंटे बाद तालाब से मिला शव



संवाददाता-बलरामपुर।

सिस्वा शिवपुर गांव में शनिवार सुबह शौच के लिए घर से निकली 54 वर्षीय सावित्री शर्मा की तालाब में डूबने से मौत हो गई। काफी देर तक घर नहीं लौटने पर परिजनों ने तलाश शुरू की। तालाब के पास उनके डूबने की आशंका हुई तो पुलिस को सूचना दी गई। करीब साढ़े पांच घंटे की खोजबीन के बाद दोपहर 3 बजे उनका शव बरामद किया गया। घटना के बाद परिवार में मातम छा गया। परिजनों के मुताबिक सहिदा सुबह करीब 8:30 बजे घर से निकली थी। काफी समय बीतने के बाद भी वापस नहीं आने पर परिजन आसपास उन्हें खोजने लगे। तालाब

करंट की चपेट में आया युवक, मौत

संवाददाता-महाराजगंज। सोनली कोतावाली क्षेत्र के ग्राम जाला दोमनजोल में शनिवार को एक बड़ा हादसा हो गया। घर में रखे देहन के को हथ लगते ही एक युवक करंट की चपेट में आकर बुरी तरह से जख्मी हो गया। आनक-जानन में परिजनों उर सतमपुर सीपसीली लेकर पहुंचे, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। युवक की मौत से घर में कोहराम मच गया। सूचना पाकर मौत पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। ग्राम जाला दोमनजोल निवासी गोकुल (42) पुत्र कुशुभ शनिवार को घर में रखे देहन के को दूसरी जगह रखने के लिए उर ला रहा था। पंखा उलटते ही वह करंट की चपेट में आकर छटपटाने लगा। परिजनों ने किसी तरह बिजली सप्लाई बंद कर उसे अस्पताल पहुंचाया, लेकिन तब तक वह दम तोड़ चुका था। बताया जा रहा है अस्पताल गांव-गांव में फरी लगभग बिसाल का सामान बेचना था। शनिवार को भी वह करंट लगने जाने वाला था कि हादसे का शिकार हो गया। पत्नी का मित्रा सुभाग, चार बच्चों के संभ से उठा मित्रा का साया। गोकुल गोविन्द के कंधे पर की सारी जिम्मेदारी ली। उसके बच बच्चे हैं। आशु 20 वर्ष, अनन्त 19वर्ष, ललित 17 वर्ष, सतीश 13 वर्ष। पति की मौत से परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। हादसे के बाद गांव में भी शोक का माहौल है।

जनपदीय कबड्डी प्रतियोगिता में 44 टीमों ने दिखाया दम

संवाददाता-बलरामपुर। सोनली कोतावाली क्षेत्र के ग्राम जाला दोमनजोल में शनिवार को एक बड़ा हादसा हो गया। घर में रखे देहन के को हथ लगते ही एक युवक करंट की चपेट में आकर बुरी तरह से जख्मी हो गया। आनक-जानन में परिजनों उर सतमपुर सीपसीली लेकर पहुंचे, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। युवक की मौत से घर में कोहराम मच गया। सूचना पाकर मौत पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। ग्राम जाला दोमनजोल निवासी गोकुल (42) पुत्र कुशुभ शनिवार को घर में रखे देहन के को दूसरी जगह रखने के लिए उर ला रहा था। पंखा उलटते ही वह करंट की चपेट में आकर छटपटाने लगा। परिजनों ने किसी तरह बिजली सप्लाई बंद कर उसे अस्पताल पहुंचाया, लेकिन तब तक वह दम तोड़ चुका था। बताया जा रहा है अस्पताल गांव-गांव में फरी लगभग बिसाल का सामान बेचना था। शनिवार को भी वह करंट लगने जाने वाला था कि हादसे का शिकार हो गया। पत्नी का मित्रा सुभाग, चार बच्चों के संभ से उठा मित्रा का साया। गोकुल गोविन्द के कंधे पर की सारी जिम्मेदारी ली। उसके बच बच्चे हैं। आशु 20 वर्ष, अनन्त 19वर्ष, ललित 17 वर्ष, सतीश 13 वर्ष। पति की मौत से परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। हादसे के बाद गांव में भी शोक का माहौल है।

जयिणी राम चौधरी इंटर कालेज कलवारी ने महादेव शुक्ल किसान इंटर कालेज गौत की हराया शिवरा 14 बालिका वर्ग में बेसिक शिक्षा विभाग प्रथम और आयोजक विद्यालय द्वितीय प्रथम



संवाददाता-बस्ती।

बस्ती। आदर्श इंटर कालेज बस्ती में शनिवार को जयिणी राम चौधरी इंटर कालेज कलवारी ने महादेव शुक्ल किसान इंटर कालेज गौत की हराया शिवरा 14 बालिका वर्ग में बेसिक शिक्षा विभाग प्रथम और आयोजक विद्यालय द्वितीय प्रथम तथा किसान इंटर कालेज मानपुर द्वितीय रहा। संस्कार 11 अंशय कुमार शुक्ल ने किया। आयोजन में शारीरिक शिक्षा प्रदीप कुमार तिवारी, प्रमोद कुमार, मंडलीय शिक्षा अमित कुमार यादव सहित निर्माणक एवं रीरिड मंडल का सहयोग रहा। प्राध्यापक संदीप कुमार श्रीवास्तव ने अतिथियों एवं शिक्षकों के प्रति आभार जताया। इस अवसर पर प्रधानाचार्य प्रमोद कुमार उपस्थित, चक्रवाणि पाठक, रामचन्द्र, कुशु देव दुबे, ब्रह्मदेव प्रसाद उपाध्याय, विकास मंद, नवीनी पांडेय, वीरेंद्र पांडेय, धनंजय दुबे, राम रिश, माखन लाल, विरेंद्र कुमार सहित तमाम गणमान्य लोग, शिक्षक एवं खेलप्रेमी उपस्थित रहे।

जयिणी राम चौधरी इंटर कालेज कलवारी ने महादेव शुक्ल किसान इंटर कालेज गौत की हराया शिवरा 14 बालिका वर्ग में बेसिक शिक्षा विभाग प्रथम और आयोजक विद्यालय द्वितीय प्रथम तथा किसान इंटर कालेज मानपुर द्वितीय रहा। संस्कार 11 अंशय कुमार शुक्ल ने किया। आयोजन में शारीरिक शिक्षा प्रदीप कुमार तिवारी, प्रमोद कुमार, मंडलीय शिक्षा अमित कुमार यादव सहित निर्माणक एवं रीरिड मंडल का सहयोग रहा। प्राध्यापक संदीप कुमार श्रीवास्तव ने अतिथियों एवं शिक्षकों के प्रति आभार जताया। इस अवसर पर प्रधानाचार्य प्रमोद कुमार उपस्थित, चक्रवाणि पाठक, रामचन्द्र, कुशु देव दुबे, ब्रह्मदेव प्रसाद उपाध्याय, विकास मंद, नवीनी पांडेय, वीरेंद्र पांडेय, धनंजय दुबे, राम रिश, माखन लाल, विरेंद्र कुमार सहित तमाम गणमान्य लोग, शिक्षक एवं खेलप्रेमी उपस्थित रहे।

